UPHIN/2016/67435 | ISSN–2456–0413

पीयर रिव्यूड हिन्दी तिमाही पत्रिका

पतहर

अक्टूबर – दिसम्बर 2024 | मूल्य ₹ 100/-

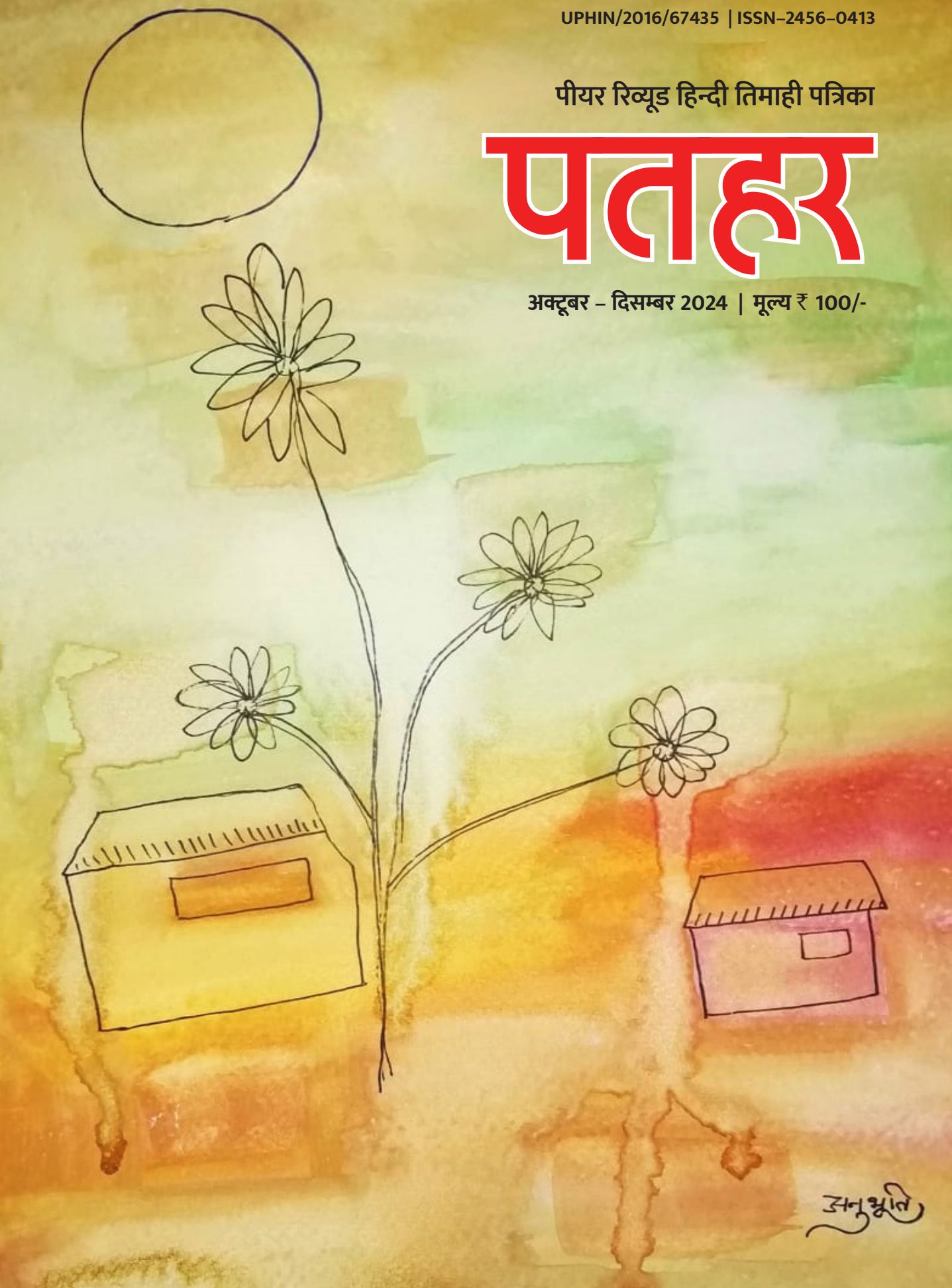

पतहर की सदस्यता ग्रहण करें

अवधि	वार्षिक	द्विवार्षिक	तीन वर्षीय	पांच वर्षीय	नमूना प्रति	आजीवन
शुल्क (पंजीकृत डाक)	370	740	1110	1775	100	4000
संस्थान शुल्क	700	1500	2100	3200	175	10000

- विशेषांक मूल्य अतिरिक्त

खाता :	
पतहर (patahar)	विभूति नारायण ओझा
A/c. 98742200010701 IFSC. CNRB0019874	A/c 98742200042158 IFSC. CNRB0019874
शाखा: केनरा बैंक, खुखुन्दू चौराहा, देवरिया	

सदस्यता शुल्क बैंक से भी भेज सकते हैं. या मोबाइल के माध्यम से विभूति नारायण ओझा के फोन पे न. 8542895340 पर जमा कर सकते हैं. कृपया पेमेंट करने के बाद रसीद, नाम पता व्हाट्सएप 9450740268 पर अवश्य भेजें.

- नया शुल्क दर अक्टूबर 2023 अंक से प्रभावी.

कृते – पतहर

संपर्क: 9450740268

संपादक विभूति नारायण ओझा द्वारा सम्पादित आलोचनात्मक पुस्तक

गज़लकार डी. एम. मिश्र
सृजन के समकालीन सरोकार

प्रकाशक : शिल्पायन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स , शाहदरा, दिल्ली – 110032

मुल्य– 550/–, पृष्ठ–230, संस्करण – 2024

संपादक सम्पर्क – 9450740268

पीयर रिव्यूड हिन्दी तिमाही पत्रिका

ISSN-2456-0413

पतहर

वर्ष 09 अंक 04
अक्टूबर – दिसम्बर 2024
कवर सहित पृष्ठ 68 मूल्य ₹100

प्रबन्ध सम्पादक
चक्रपाणि ओझा
सम्पादक
विभूति नारायण ओझा
सहायक सम्पादक
डॉ. कमलेश कुमार यादव

सम्पादक मण्डल

- डॉ. उन्मेष कुमार सिन्हा
- डॉ. विजय आनंद मिश्र
- डॉ संदीप कुमार सिंह

Email-hindipatahar@gmail.com

Mob. : 9450740268

http://patahar.blogspot.com/?m=1
www.notnul.com

दिल्ली सम्पर्क
स्वदेश सिन्हा
103 B, पाकेट ए- 1,
मयूर विहार फेज़ - 3, दिल्ली -110096

आवरण एवं रेखाचित्र
अनुभूति गुप्ता
मो. 9695083565

पतहर, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक विभूति नारायण ओझा द्वारा ज्योति ऑफसेट प्रेस सलेमपुर देवरिया से मुद्रित एवं कार्यालय ग्राम बहादुरपुर पोस्ट बड़हरा (खुखुन्दू) जिला देवरिया (उ.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक- विभूति नारायण ओझा

प्रकाशित सामग्री से सम्पादक/ प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवादास्पद मामले देवरिया न्यायालय के अधीन होगा।

UPHIN/2016/67435

पीयर रिव्यूड टीम

- **प्रो. चितरंजन मिश्र,**
  पूर्व प्रति कुलपति, हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा।
- **प्रो. मुरली मनोहर पाठक,**
  कुलपति , श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- **प्रो. रामदरश राय,**
  कृतकार्य आचार्य, हिंदी विभाग एवं निदेशक पत्रकारिता संस्थान, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **डॉ विक्रम मिश्र,**
  सेवानिवृत्त उपाचार्य, हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **प्रो. अरविंद त्रिपाठी,**
  कृतकार्य आचार्य, हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **प्रो. चन्द्रेश्वर,**
  कृत आचार्य, एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज, बलरामपुर
- **प्रो. अंजुमन आरा,**
  अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, रेवेंशा विश्वविद्यालय, कटक, उड़ीसा।
- **प्रो. अजय कुमार शुक्ला,**
  अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **डॉ. सचिन गपाट,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय मुंबई।
- **डॉ. मधुसूदन सिंह,**
  सहायक आचार्य, दिग्विजय नाथ एलटी प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर।
- **डॉ. बसुंधरा उपाध्याय,**
  सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।
- **डॉ. लक्ष्मी मिश्रा,**
  सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **डॉ. अजीत प्रियदर्शी,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, डीएवी पीजी कॉलेज लखनऊ।
- **डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज पश्चिम बंगाल।
- **डॉ. प्रदीप त्रिपाठी,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक, सिक्किम।
- **डॉ बिपिन कुमार यादव,**
  सहायक आचार्य, जेएलएन पीजी कालेज, महराजगंज।

खाता विवरण – पतहर, खाता सं. : 98742200010701
IFSC : CNRB0019874, केनरा बैंक, खुखुन्दू, देवरिया

खाता विवरण – विभूति नारायण ओझा, खाता सं. : 98742200042158,
IFSC Code : CNRB0019874, केनरा बैंक, खुखुन्दू, देवरिया

सदस्यता शुल्क विवरण कवर पृष्ठ पर देखें

इस अंक में

❖ सम्पादकीय 3

❖ शोध पत्र

• महाभारत आधारित 'अंधायुग' में आधुनिक युग-बोध 4
– प्रो.ललित चावड़ा

• एक साहित्यिक की डायरी और मुक्तिबोध 7
– डॉ. चतुरानन ओझा

• निर्मल वर्मा के निबन्धों में अभिव्यक्त समाज और संस्कृति 9
– डॉ. विमलेश कुमार मिश्र

• वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सूचना का अधिकार 13
– डॉ. दिनेश कुमार चौधरी

• आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में इतिहास बोध 18
– डॉ. सियाराम मीणा

• लोकतंत्र की ट्रैजिडी के कलमनवीस : हरिशंकर परसाई 22
– डॉ. मधुमिता ओझा

• मध्यकालीन काशी की सांस्कृतिक छवि को उकेरता "नीला चांद" 25
– उपेंद्र तिवारी

• सतीश जमाली के रचना संसार में दलित विमर्श 28
– शिव शरन द्विवेदी

❖ आलेख

• काकोरी काण्ड : जिये भी शान से मरे भी शान से 30

• सिर्फ स्नान नहीं है कुंभ 32
– अरुण तिवारी

• हिन्दी और उसकी बोलियाँ 35
– डॉ. नरेश कुमार सिहाग

• बड़े लोगों की बड़ी बात 38

❖ कहानी

• माँ का दर्द 31
– प्रिया देवांगन "प्रियू"

• गांधी धून 39
– श्यामल बिहारी महतो

• बीमारी 42
– राजनारायण बोहरे

❖ साक्षात्कार

• समाज को जगाने के लिए टॉर्चबियरर की तरह से होता है साहित्यकार : नीरजा माधव 45
– डॉ. नूतन पाण्डेय

❖ ग़ज़ल

• दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल 12

• डी एम मिश्र की ग़ज़ल 12

• केशव शरण की ग़ज़लें 51

❖ कविता

• चंद्रेश्वर की तीन कविताएँ 52

• युवा कवि गोलेन्द्र पटेल की कविताएँ 53

• प्रियंका यादव की कविताएँ 54

• सुभाष राय की कविताएँ / आवरण पृष्ट

❖ पुस्तक समीक्षा

• भटके हुए लोगों को राह दिखाती कविताएँ 55
– डॉ. एकता मंडल

• दहकते दिनों की दारुण दास्तान 57
– उद्भव मिश्रा

❖ संस्मरण

• मनीषी साहित्य-साधक संत-हृदय : 'मदनेश' 58
– शशिबिन्दु नारायण मिश्र

❖ छपते - छपते

• इतनी क्या जल्दी थी जाने की ज़ावेद? 62

❖ स्मृति आलेख

• नीति, नियति और नीयत 63

ISSN–2456–0413

साहित्यिक पत्रिकायें सिर्फ साहित्य से ही नहीं परिचित करातीं बल्कि मनुष्य के दिमाग में भी परिवर्तन लाती हैं। मनुष्य को मनुष्यता तक ले जाने का काम यही पत्रिकायें करती हैं। आज जब पत्रकारिता पूरी तरह से बाजार और सत्ता की गोद में समा चुकी है तब छोटे-छोटे शहरों,कस्बों से निकलने वाली लघु पत्रिकायें पत्रकारिता के मूल्य को जिन्दा रखने का काम कर रही हैं। ये पत्रिकायें आम पाठकों के शिक्षण- प्रशिक्षण का काम करती हैं। भले ही इन पत्रिकाओं का दायरा सीमित हो लेकिन जहाँ होती हैं पूरी ताकत से अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं। पतहर भी इन्ही लघु पत्रिकाओं में से एक है। जो अपनी क्षमतानुसार मनुष्य की मनुष्यता को जिंदा रखने का कार्य कर रही है। क्षेत्रीय, स्थानीय लेखकों की रचनाएँ जिन्हें बाजारवादी पत्रिकायें नकारने का कार्य करती हैं उन्हें स्थापित करने का काम पतहर द्वारा किया जा रहा है। बिना किसी बडे सांस्थानिक सहयोग के पतहर इस अंक के साथ नौ वर्ष का सफर पूरा कर रही है। अक्सर साहित्यिक पत्रिकाओं में खेमेबंदी के आरोप लगते रहते हैं लेकिन पतहर ने साहित्यिक पत्रकारिता के मूल्यों की रक्षा करते हुए सभी स्तरीय रचनाओं को स्थान दिया। पतहर ने अपने प्रकाशन की अल्पअवधि में लघु पत्रिका के रूप में उन सभी चुनौतियों का सामना किया है जो स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान निकलने वाली पत्रिकाओं को करना पड़ा था। कोई भी पत्रिका सिर्फ प्रसार के आधार पर लघु भले हो लेकिन विचार के आधार पर कभी लघु नहीं होती,यही पत्रिकायें परिवर्तन लाती हैं पुरस्कारवादी पाठकों को पुरस्कार वाली पत्रिकायें ही पसंद आती है। पतहर फिलहाल परिवर्तन की कामना करने वाली साहित्यिक पत्रिका है। आज सरकारी सहयोग या विज्ञापन मिलना कठिन काम है,पुरस्कार तो दूर की बात है। डॉ.डीएम मिश्र का एक शेर है कि- "पुरस्कार पाना सरकारी सबके बस की बात नहीं"। ऐसा ही पतहर और ढेर सारी लघु पत्रिकाओं के साथ भी है। आज लघु पत्रिकायें संसाधनों के अभाव में बंद हो रही हैं। यह संकट बाजारवादी पत्रिकाओं के साथ भी है लेकिन उनका प्रतिशत कम है। लघु पत्रिकायें किसी तरह सहयोग के आधार पर नियमित अनियमित प्रकाशित होती रहती है।

सरकारी उदासीनता ने साहित्यिक पत्रिकाओं को एक गहरे संकट में डाल रखा है। फिर भी यह उम्मीद और विश्वास है कि लाख बाधायें आये लेकिन लघु पत्रिकायें मरेंगी नहीं। एक बंद होगी तो दूसरी पैदा होगी। अभी भी लघु पत्रिकायें समाज के लिए उपयोगी हैं। भारतेन्दु युग से शुरू हुई लघु पत्रिकायें आज विभिन्न क्षेत्रों, कस्बों से निकल कर अपने अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। यह सही है कि लघु पत्रिकायें पुरस्कार के लिए नहीं परिवर्तन के लिए होती हैं,वे विचार पैदा करती हैं। पतहर भी अपनी इन्हीं भूमिकाओं के साथ अपने पहले दशक की तरफ बढ़ रही है।

अनेक उतार चढ़ाव का यह वर्ष शहीदों का शताब्दी वर्ष भी है। काकोरी काण्ड के अमर शहीदों के स्मरण का वर्ष है। साथ ही महान क्रांतिकारी उधम सिंह, बिरसा मुंडा, मुक्तिबोध, वामिन जौनपुरी, रामवृक्ष बेनीपुरी,अदम गोंडवी, दुष्यंत कुमार, माओत्से तुंग, एंगेल्स आदि के स्मरण का भी अक्टूबर-दिसम्बर का महीना है। पतहर के इस अंक में काकोरी काण्ड के अमर शहीदों पर एक आलेख नागरिक अखबार से साभार प्रकाशित कर रहे हैं। चूंकि पतहर का दायरा विद्यार्थियों- शोधार्थियों के बीच भी है ऐसे में उनकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पीयर टीम द्वारा समीक्षित शोध परक लेखों का भी प्रकाशन किया जाता है। इस अंक में भी विभिन्न विषयों पर शोध आलेख शामिल हैं। साथ ही विभिन्न मुद्दों पर आलेख, कविता, कहानी, हाइकु, संस्मरण के साथ पतहर पत्रिका के संस्थापक सहयोगी रहे सामाजिक कार्यकर्ता जावेद अनीस (भोपाल) के आकस्मिक निधन पर स्वदेश कुमार का एक स्मृति आलेख और जावेद का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर लिखा एक पुराना आलेख उनकी स्मृति में प्रकाशित कर रहे हैं। पतहर में और भी स्तरीय व पठनीय सामग्री आप को मिलेगी। पतहर नये साल में भी और गंभीरता से जोश के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करायेगी। नये वर्ष में प्रकाशित होने वाले विशेषांक की सूचना भी जल्द ही हम देगें। हमें विश्वास है कि आप अपना प्यार हमें देगें। किसी भी पत्रिका की ताकत पाठक, सदस्य होते हैं उन्हीं के बल पर मंहगाई के इस दौर में बिना विज्ञापन के प्रकाशन हो पाता है। इसलिए अपेक्षा है कि अधिकाधिक पतहर के सदस्य बनें,बनायें और रचनात्मक सहयोग के साथ आर्थिक रूप से भी सुदृढ़ करें, जिससे कि हम इस साहित्यिक पत्रकारीय यात्रा को निरंतरता प्रदान कर सकें।

पतहर का यह अंक इस शीत ऋतु में गर्माहट का एहसास करायें,आपके विचारों में प्रवाह लाये और आप स्वस्थ व सक्रिय रहें ऐसी उम्मीद है। आप सभी को नववर्ष 2025 की हार्दिक शुभकामनाएं!

- **विभूति नारायण ओझा**

सम्पादक

शोध पत्र

महाभारत आधारित 'अंधायुग' में आधुनिक युग-बोध

प्रो.ललित चावड़ा

धर्मवीर भारती का प्रसिद्ध नाटक 'अंधायुग' महाभारत के युद्ध के बाद के अंतिम दिनों की घटनाओं को आधार बनाकर रचा गया है, लेकिन यह नाटक केवल एक ऐतिहासिक कथा नहीं है। इसमें आधुनिक युग-बोध को गहराई से प्रस्तुत किया गया है। 'अंधायुग' एक रूपक है, जो आधुनिक मानव समाज की चुनौतियों, नैतिक पतन, और राजनीतिक तथा सामाजिक जटिलताओं को महाभारत की पृष्ठभूमि में व्यक्त करता है।

महाभारत एक प्रकार से विश्व कोष ही है। यह अपने मूल रूप में एक वीर काव्य या लोकगाथा के रूप में रहा होगा किंतु वह आज संपूर्ण भारत की प्राणधारा को समेटता हुआ अपनी अनेकविध महत्ता के कारण विद्वानों में समाद्भुत है। यह ग्रंथ भारत की भूमि के ज्ञानी-मनस्वी ऋषिओ द्वारा युग बोध से संचित जीवन की संपूर्ण व्याख्या करता है।

हिन्दी साहित्य में महाभारत से अनुप्राणित साहित्य की सुदीर्घ परंपरा देखने को मिलती है महाभारत का कथानक आज के रचनाकारो के लिए उर्वर साबित हो रहा है क्योंकि ईर्ष्या, द्वेष, कपट, वर्णवाद आदि की विकट समस्याएँ अभिव्यंजित है, जिसे हम महाभारत में आदि से अंत तक देखते है। इस प्रकार महाभारत में चित्रित संघर्ष के अनेक रुप और पक्ष है। जिनका चिंतन करके आधुनिक कवि अपने अपने ढंग से युगीन संवेदना को वाणी दे पा रहे है। महाभारत हमारे देश का शाश्वत सत्य है, जिसे हम समय-समय पर दोहराते आये है।

महाभारत के युद्ध के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि दमनकारी शक्तियों को हारना पडता है। सत्य की ओर रहने वाले पक्ष की विजय होती है, क्योंकि इनकी लड़ाई न्याय की होती है किंतु अंधकार दोनों के सामने अवतरित होता है अनास्था का अंधकार, मूल्यहीनता और शुष्कता, अविश्वास एवं शाप का अंधकार, जीवन की नस-नस में खून बनकर बहने लगता है। अंधायुग इसी साम्राज्य की गाथा है, जहाँ प्रकाश की किरण के लिए लोग तड़पते हैं।

विश्वयुद्धो की विभीषीका के बाद सांस्कृतिक विघटन की जो भयंकर समस्या विश्व मानव के सामने आयी, यह बहुत कुछ महाभारत युद्ध के उपरांत प्रकट विकृति, अमर्यादा एवं अनैतिकता जैसी ही है। महाभारत की तरह ही द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भी धर्म, ईश्वर, नैतिकता, सत्य, मर्यादा, आचरण, मानवीय मूल्य और जीवन दर्शन की मीनारें तेजी से ढहने लगी। दोनो विश्वयुद्धों से पीडित मानवीय संवेदनाएँ, मानव का घोर अवमूल्यन, मूल्यों के विघटन की विभीषिका, जिजीविषा के लिए भटकते युवा वर्ग का नैतिक पतन, सामाजिक अधोगति, नेताओं का चारित्रिक हास इत्यादि अनेक विसंगतियो का साम्य महाभारत युद्ध से बिठाकर मिथकीय क्लेवर में आज के व्यक्ति की मनोयंथीयों को सुलझाने की कोशिश 'अंधायुग' मे धर्मवीर भारती ने की है।

'अंधायुग' में भारती जी की मानसिकता का प्रतिक्रियात्मक पक्ष सशक्त रूप में व्यक्त हुआ है। यहाँ घृणा, असंतोष, आक्रोश, संत्रास, कुंठा, अवसाद आदि आधुनिक संवैनदा के सभी रूपों को वाणी मिली है। कवि ने महाभारत के उतरार्ध की घटनाओ का आश्रय लेकर इस रचना का गठन किया है। महाभारत के अठारवें दिन की संध्या से प्रभास तीर्थ में कृष्ण की मृत्यु के क्षण तक के घटनाक्रम को समसामायिक संदर्भो के नये ताने बाने में गूँथा गया है। 'अंधायुग' काव्य के कथानक का आधार महाभारत है। इसके कथासूत्र इन्य पर्व, गदा पर्व, सौतिक पर्व, स्त्री और मौसल पर्व आदि में व्याप्त है।

'अंधायुग' का कथानक भले ही पौराणिक ऐतिहासिक है, किन्तु इसका कथ्य सर्वथा अर्वाचीन है। इस काव्य में 'महाभारत' के अठारवें दिन की संध्या से लेकर कुरुक्षेत्र में प्रभु की मृत्यु' तक की घटनाओं के संबंध में जो भी कुछ कथा रूप में कहा गया है, वह एक ओर महाभारत कालीन युद्ध-जन्य यथार्थ परिवेश और उससे प्रस्तुत सत्य को वाणी देता है और दूसरी ओर मिथकीय पद्धति के सहारे रचना में प्रस्तुत आधुनिक युग बोध को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

'अंधायुग' का प्रकाशन सन १९५४ में हुआ है। इसके रचनाकाल और युगबोध पर थोडा विचार करने पर कहा जा सकता है कि उस समय अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मानव दो-दो विश्वयुद्धों की विभीषिका झेल चुका था और विश्व मानव को तीसरे महायुद्ध की संभावना एवं विभीषिका से गस्त कर रही थी। राष्ट्रीय स्तर पर भी भारत-पाक विभाजन की त्रासदी को भारतीय जनमानस झेल रहा था। स्वयं युग-दृष्टा और युग सष्टा रचनाकार भारती ने इस युग पीडा को अपनी आँखों से देखा था और अपने मन-आत्मा में भोगा था और यह अनुभव किया था कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जो भयानक ध्वंस, विनाश, रक्तपात हुआ है, मानव के अंदर मानव के प्रति जो क्रोध, घृणा, प्रतिशोध, प्रतिहिंसा जैसी विकृत मनोविकृतियाँ पनपती है; मान, मर्यादा, आचरण, आस्था, विश्वास, सत्य, स्नेह, समर्पण, त्याग, निष्ठा, संबंध प्रगाढता जैसे नैतिक, धार्मिक और सामाजिक जीवन-मूल्यों का हास हुआ है और इन सबके स्थान पर मनुष्य में जो स्वार्थता, मोहांधता, बेईमानी, भय, आतंक, कुष्ठा, निराशा, निरर्यकता, पीडा आदि विघटनशील मनोवृत्तियाँ प्रवेश कर गयी है, यह सब निश्चय ही वर्तमान मानव और मानव भविष्य के लिए घातक एवं चिंता का विषय हैं। तभी भारती जी जैसे संवेदनशील रचनाकार ने अपने युग सत्य को वाणी देने के लिए महाभारत के उस कथा अंश को 'अंधायुग' में प्रस्तुत किया।

ISSN–2456–0413